DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email--Kdkbharti08@gmail.com
B.A Part--1.Paper--2. Date-29-07-2020
Mo.No--9234999361.

आधुनिक भारतीय राजनितिक चिन्तन को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्वों की विवेचना करें।

आधुनिक भारतीय राजनितिक चिन्तन को एक क्रमबद्ध और व्यवस्थित दर्शन के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है।इस संबंध में कहा जाता है इसमे तार्तिक विश्लेषण की कमी है और सिद्धन्त निर्माण की क्षमता का अभाव है।आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन का उद्देश्य राज्य, सरकार, सम्प्रभुता आदि अवधारणाओं के बारे में मौलिक चिन्तन भारत की स्वतंत्रता सामाजिक सुधार आंदोलन तथा निर्धनता आदि के निदान उपायों का विवेचन करना मात्र है।आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारों का व्यवस्थित और क्रमबद्ध इतिहास उपलब्ध नहीं है।फिर भी राष्ट्रवाद, नव-मानववाद, सर्वोदय, लोकतांत्रिक समाजवाद आदि के बारे में भारतीय विचारकों के चिन्तन में नवीनता परिलक्षित होती है मुख्यतः *18*वीं शताब्दी के उत्तारार्द्ध से वर्तमान तक का भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन ही आधुनिक कहा जाता है।धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आन्दोलन के प्रमुख चिन्तक राजा राममोहन राय,स्वामी दयानन्द सरस्वती, एनी बेसेन्ट आदि हैं।वस्तुतः भारत में आधुनिक राजनीतिक एवं सामाजिक चिन्तन का विकास राष्ट्रीय आन्दोलन और उसके बाद की राजनितिक आर्थिक परिस्थितियों की उपज है।

इन धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आन्दोलनों ने भारतीय समाज में व्याप्त अन्धविश्वास को दूर कर भारतीय समाज को प्रत्येक वस्तु, तर्क,विज्ञान और विवेक के प्रकाश में देखना सिखाया।इन सुधार आन्दोलनों ने ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत आत्महीनता की भावना से पीड़ित भारतीयों में भारत के गौरवपूर्ण अतीत का चित्रण उपस्थित किया जिसके आधार पर राष्ट्रीयता की भावना विकसित हो सकी और भारतीय स्वतंत्रता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सका।इन आन्दोलनों ने धर्म व समाज की एकता के आधार पर देशव्यापी एकता और संगठन को जन्म दिया।

आधुनिक राजनीतिक चिन्तन को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व इस प्रकार है----

*1.*यूरोपीय सभ्यता का प्रभाव----अंग्रेजों के आगमन से भारत में यूरोपीय सभ्यता का पदर्पिण हुआ।पाश्चात्य जगत् के सम्पर्क में आने से भारतीयों के राष्ट्रीय, सामाजिक तथा धार्मिक जीवन में नवचेतना का संचार हुआ।पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार के कारण राष्ट्रीयता का विकास हुआ और हिन्दुओं का ध्यान समाज सुधार की ओर आकृष्ट हुआ। सामाजिक क्षेत्र में सती प्रथा, बाल हत्या, बहुविवाह, बालविवाह आदि कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठने लगीं।

*2.*ईसाई पादरियों का धर्म प्रचार-----अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ विदेशी पादरी और धर्म प्रचारक भी भारत आये।इन लोगों ने देश में ईसाई धर्म का प्रचार करना शुरू कर दिया।साथ ही भारतीय धर्म की आलोचना भी करने लगे।बहुत से लोग ईसाई धर्म में दीक्षित हुए तो कट्टर हिन्दुओं की आँखे खुली।उन्होंने देखा कि ईसाई धर्म के प्रचारक भारत के धार्मिक संगठन की कमजोरियों से नायायज लाभ उठा रहे हैं।

*3.*सुधारकों का प्रादुर्भाव-----उन्नीसवीं शताब्दी में अपने देश में अनेक सुधारक पैदा हुए।इनमें राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन,देवेन्द्र ठाकुर, महर्षि दयानन्द, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।इन महान देश भक्तों ने लोगों को प्रचीन भारतीय विचारों की महत्ता का संदेश देकर अपने देशवासियों को जागृत किया।उन्होंने भारतीय धर्म और समाज में घुसी बुराइयों की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

4. नवजागरण का प्रभाव----नवजागरण का प्रभाव भारतीय धार्मिक एवं सामाजिक जीवन पर पडा।जिसमें भारतीय संस्कृति का स्वरूप सशक्त हो उठा।ब्रह्म समाज, आर्य समाज प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, आदि ने धर्म सुधार का बीडा उठाया और जबरदस्त आन्दोलन शुरू किया।सती प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह, बाल हत्या, मूर्ति पूजा की कटु आलोचना होने लगी और विधवा विवाह, नारी शिक्षा, अछूतोद्धार आदि का समर्थन शुरू हुआ।समाज सुधार के उद्देश्य से विद्यालयों ,कॉलेजों,अनाथालय विधवा आश्रमों की स्थापना हुई।

महात्मा गांधी के हरिजनोद्धार आन्दोलन के फलस्वरूप अस्पृश्यता कम होने लगी।सुधार आंदोलन का प्रभाव सरकार पर भी पड़ा।कानून बनाकर अनेक सामाजिक कुरीतियों का अन्त किया गया।

*5.*एशियाटिक सोयायटी के कार्य-----अठारहवीं शताब्दी के बंगाल में एशियाटिक सोयाइटी की स्थापना हुई।इसकी स्थापना से भारतीय पुनर्जागरण को एक सबल सहारा मिला।इस सोयाइटी के तत्वावधान में प्रचीन भारतीय ग्रंथ तथा यूरोपीय साहित्यों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ।तुलनात्मक भाषा अध्ययन के फलस्वरूप यूरोपीय वैज्ञानिक विद्वता भारतीयों को उपलब्ध हुई।

*6.*पश्चिमी शिक्षा----पाश्चात्य शिक्षा के कारण भारतीय सर्वोत्तम अंग्रेजी विचारकों के सम्पर्क में आए।उन्हें मिल्टन, बर्क,मिल, मैकाले और हरबर्ट स्पेन्सर आदि विचारकों की कृतियों का ज्ञान प्राप्त हुआ, जिनके द्वारा उनमें स्वतंत्रता, राष्ट्रीयता और स्वराज्य की जीवनदायिनी भावनाओं का संचार हुआ।राजा राममोहन राय, दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्र नाथ वनर्जी फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले ये सभी सन्देशवाहक अंग्रेजी शिक्षा का ही देन है।

समाचार पत्रों के आगमन के साथ राजनितिक चेतना एवं पुनर्जागरण की शक्तियां सुढ़ढ़ होने लगीं। समाचार पत्रों ने राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र के अन्धविश्वास एवं बुराइयों को जनता के सामने रखा और इनसे बचे रहने का आह्वान किया जिससे जनता में नई चेतना का संचार हुआ।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन मुख्यतः धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आन्दोलन, उदारवाद एवं उग्रवादी विचारकों, हिन्दू एवं इस्लामी चिन्तकों, समाजवादी एवं सर्वोदयवादी चिन्तकों से प्रभावित रहा है।

आगे, धन्यवाद।

2020-07-29
© From vivo Notes

Scanned with CamScanner